RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 36 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 9 फरवरी 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

विकास के लिये दूरदृष्टि जरूरी

भूपाल सिंह मर्तोलिया से बातचीज

बुजुर्गों की सूझबूझ ने सुरक्षित रखा

मर्तोली के पहले प्रधान पधानचारी परिवार के गोपाल सिंह मर्तोलिया रहे

माइग्रेशन में कपकोट पड़ाव था, जिसका मुख्य केन्द्र गुलेर ग्राम

जोहार के पहले इंजीनियर खुशाल सिंह मर्तोलिया का दृढ़इच्छा शक्ति वाले थे

कार्यालय प्रतिनिधि

विकास के लिये नेता बहक कर बोलते हैं और फफक कर रोते हैं तो ऐसा लगता है मानो इनकी चिन्ता और चिन्तन उबार लेगा लेकिन व्यवहार में क्या ऐसा है? नहीं। जबकि विकास के लिये दूरदृष्टि होना जरूरी है जो निरन्तरता और चिन्तन से सिद्ध होती है। ऐसा चिन्तन हमारे बुजुर्गवार किया करते थे जिनके बल का प्रसाद भावी पीढ़ियों को मिल रहा है। ऐसे ही जोहार मर्तोली के जीवन सिंह बूबू की बात करते हैं, जिनके परिवार की गणना पधान राठों में होती है। इनके पुत्र पुत्र हुए गोपाल सिंह मर्तोलिया। स्व.गोपालसिंह जी की अगली पीढ़ी में उनके पुत्र चन्द्र सिंह, माधो सिंह, खुशाल सिंह, रुद्र सिंह, सुन्दर सिंह, भूपाल सिंह, गणेश सिंह मर्तोलिया हैं। पधानचारी परिवार के गोपाल सिंह मर्तोलिया सीमान्त के मर्तोली ग्राम के पहले प्रधान बने थे। भारत-तिब्बत व्यापार के दौर में जब सीमान्त क्षेत्र के लोगों का परम्परागत व्यापार और कृषि आजीविका का मुख्य साधन था, तब परिवारों में से गिने-चुने ही शिक्षा के लिये आगे जाते थे क्योंकि ज्यादातर उस दुर्गम क्षेत्र में अपने पुस्तैनी कार्य की संभाल के अलावा कुटीर उद्योग धन्धों में थे। मौसम के हिसाब से परिवारों का माइग्रेशन होता तो गोपाल सिंह जी का परिवार भी अपने मूल मर्तोली से मुनस्यारी फिर कपकोट जाता था। कठिनाई भरे उन दिनों में भी इस परिवार के सदस्य जिस प्रकार से सर्वोच्च पदों में रहे हैं वह मिसाल है। परिवार के गोपाल सिंह मर्तोलिया बातचीज में कहते हैं- 'बुजुर्गों की सूझबूझ ने पूरे समाज को सुरक्षित रखा।' वाकेई मर्तोली में भोजपत्र का जो विशाल जंगल है वह नन्दामाई के आंगन की शोभा हैं। अपने जंगल को बचाए रखने के बुजुर्गों संकल्प को आज भी लोगों की मान्यता है।

अपने इतिहास-भूगोल पर निरन्तर लेखन-चिन्तन करने वाले भूपाल सिंह अपनी पुरानी यादों को सांझा करते हुए कहते हैं- 'मेरे तो बचपन के दिन थे, परिवार का मुख्य पारम्परिक व्यवासय भारत-तिब्बत व्यापार था। वर्ष 1962 में भारत-चीन युद्ध के बाद तिब्बत से व्यापारिक सम्बन्ध समाप्त हो गये। अत: वैकल्पिक आजीविका हेतु उच्च शिक्षा को प्राथमिकता दी गई। भारत-तिब्बत सीमा की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये 24 अक्टूबर 1962 को भारत तिब्बत

शेष पृष्ठ 2 पर

भारत के मीलपत्थर

जहाँ जंगलों में हुआ था संस्कृति का अद्भुत प्रसार

सूर्यकान्त बाली

भारत के बारे में हमारी समझ तब तब अधूरी रहने वाली है जब तक हम इस देश में विकसित वन संस्कृति के बारे में अपना परिचय नहीं पा लेते। भारत के मीलपत्थरों की इस श्रृंखला में कभी हमने आपको दक्षिण भारत के दण्डकारण्य के बारे बताया था। जो लोग भारत की पुरानी काया के बारे में थोड़ी सी भी जानकारी रखते हैं उन्होंने यहाँ के वनों के बारे में थोड़ी या बहुत जानकारी जरूर हासिल कर रखी होगी। मसलन जिन्हें रामायण के बारे में पता है (और इस देश में ऐसा कौन है जिसे रामकथा का पता न हो) वे दण्डकारण्य नामक अरण्य अर्थात वन से परिचित न हों, यह सम्भव ही नहीं है। महाभारत की कथा बहुत बड़ी है और उसमें जाने कितनी ही उपकथाएँ भरी पड़ी हैं। पर महाभारत कथा से परिचित अधिकांश पाठकों को पता होगा कि आज जहाँ दिल्ली का पुरानी किला है, यानी जो इन्द्रप्रस्थ है, वहाँ कभी खाण्डववन था जिसे कृष्ण की मदद से जलाकर पाण्डवों ने इन्द्रप्रस्थ नाम से नया शहर ही बसा दिया था और इसी शहर में वह महल था जहाँ राजसूय यज्ञ देखने आए दुर्योधन का पाँव फिसला था, जिसे गिरते देख द्रोपदी हँस पड़ी थी। भारत के मीलपत्थरों का विवरण देने वाली इस अपनी भारतगाथा में हम आगे चलकर नैमिषारण्य का वर्णन कने ही वाले हैं जहाँ सूतजी के नेतृत्व में शौनक आदि हजारों मुनियों ने एक लम्बा ऐतिहासिक सम्वाद किया था। जिसे न दण्डकारण्य का पता है, न खाण्डववन का और न ही नैमिषारण्य वन का, उस हिन्दुस्तानी को भी इतना तो पता ही है कि इस देश में कभी तपोवनों का जाल बिछा हुआ था और तपोवन नाम से ही जाहिर है कि तपस्या करने के ये स्थान वनों में ही हुआ करते थे।

तो क्या होते थे तपोवन? क्या होता था वहाँ? नाम से तो ऐसा लगता है कि वन के किसी हिस्से में तपोवन एक ऐसी जगह होती होगी जहाँ ऋषि मुनि बैठकर तपस्या करते रहते होंगे। सुबह उठते होंगे, नहा धोकर जो समाधि में बैठते होंगे तो बस रात होने पर ही उठते होंगे। ऐसा नहीं है। अगर आप तपोवनों के बारे में ऐसा मान बैठे हों तो कृपया इस भ्रान्ति से बाहर आ जाएँ और तपोवनों के बारे में सही राय कायम कर सकें, इसके लिए हम आपको कुछ उदाहरण दिए देते हैं जो लोगों को प्राय: पता है। हस्तिनापुर (तब प्रतिष्ठान) के एक पुरुवंशी सम्राट दुष्यन्त का जिस शकुन्तला नामक ऋषिकन्या से पहले प्रेम हुआ था और फिर विवाह भी हो गया था, वह शकुन्तला यानी विश्वामित्र-मेनका की सन्तान वह शकुन्तला कण्व ऋषि के तपोवन में रहती थी। राम ने भार्या सीमा को उसकी गर्भिणी अवस्था में ही राजमहल से निकाल दिया था तो उस महारानी को वाल्मीकि मुनि के आश्रम यानी तपोवन में ही सहारा मिला था जहाँ लव कुश नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए और उन्हें अस्त्र शस्त्र की तब की अत्याधुनिक शिक्षा भी वहीं तपोवन में मिली। जिन याज्ञवल्क्य को राजा जनक की ब्रह्मसभा में सोना मढ़ी सीगों वाली हजार गउएँ मिली थी, वे महान याज्ञवल्क्य अपनी दो पत्नियों- कात्यायनी और मैत्रेयी समेत तपोवन में ही कहा करते थे और उनकी गउएँ भी वहीं पर थीं। राम को वनवासके समय अत्रिमुनि के तपोवन में जाने का सुअवर मिला था, वे अत्रिमुनि दण्डकारण्य के एक तपोवन में ही रहा करते थे जहाँ उनकी पत्नी अनसूया ने सीता को सोने के गहनों से लाद दिया था। कृष्ण और बलराम जिन सांदीपनि मुनि के पास शिक्षा ग्रहण करने गए थे वे सांदीपनि मुनि तपोवन में ही रहा करते थे। आप में से कइयों ने अपने स्कूली जीवन में एक कहानी पढ़ी होगी। कहानी धौम्य ऋषि की है जिनके तपोवन में आरुणि पढ़ा करते थे। आरुणि ने ही एक रात मूसलाधार बारिश के पानी को आश्रम में प्रवेश करने से रोकने के लिए खुद को रात भर मेढ़ पर लिटाए रखा और आरुणि के इस कठिन कर्म से प्रभावित होकर आचार्य धौम्य ने उनका नाम रख दिया था, उद्दालक आरुणि यानी उद्धारक आरुणि। हम इस पर विस्तार से लिख चुके हैं।

आप पढ़ते पढ़ते थक जाएँगे, बेशक हम ऐसे उदाहरण बताते बताते नहीं थकेंगे। यानी उदाहरण असंख्य हैं। पर क्या इतने उदाहरणों भर से ही पुराने जमाने के तपोवनों की तस्वीर साफ नहीं हो जाती? यकीनन हो जाती है और तस्वीर यह बनती है इन तपोवनों में बाकायदा पारिवारिक जीवन था। न रहा होता तो कैसे महान विचारक याज्ञवल्क्य अपनी दो पत्नियों के साथ ऐसे किसी तपोवन में रहते होते? तस्वीर यह भी बनती है कि तपोवनों में ये परिवार सामान्य सांसारिक जीवन बिताया कराते थे, अन्यथा कैसे कण्व के तपोवन में जाकर महाराज दुष्यन्त ऋषि कन्या शकुन्तला से प्रेम

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

फेसबुक पर अनावश्यक से बचाव

सोशल मीडिया की क्रान्ति से हर कोई इतना नजदीक है कि भौतिक रूप से वह समाज से दूरी बना चुका है। इस सच्चाई को जानना चाहिये कि आस पास रहते हुए लोगों के बीच उठना-बैठना बन्द हो चुका है, कोई किसी की सुध नहीं लेना चाहता है, कूड़ा-कचरा जितना कुछ है सब सोशल मीडिया में भरने की होड़ मची है। आश्चर्य तो तब होता है जब एकदम बेबकूफ भी भले लोगों की फोटो को लगातार फेसबुक पर चेपते हुए प्रशंसा करने लगते हैं, नेतागण किसी के घर दुःख प्रकट करने जाने का फोटो फेसबुक में लगाने पर गर्वित होते हैं, अपने सड़कछाप जोश को दिखाने के लिये भी यह बेहतर मंच बन चुका है। देखादेखी में महिलाएं लगातार अजब-गजब सोशल मीडिया पर बिखर रही हैं।

हमारे समाज का तानाबाना इतनी सस्ता नहीं था जितना सोशल मीडिया ने बना दिया है। अपने ज्ञान, अपने भले सन्देश, अपनी संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिये फेसबुक इत्यादि प्लेटफार्म भले हैं लेकिन इसकी आड़ में मचे धमाल को समझना होगा। निहायत ही बेवकूफ जिनका काम ही दिनभर जेब में हाथ डालकर फोटो चेपना हो वह बहुत दिनों नहीं चलता है। देखा-देखी के ऐसे भ्रम में कई लोग फंस जाते हैं परन्तु सच्चाई यही है कि यह एकदम अकेले और कुण्ठाग्रसित हैं। इसलिये जरूरी है फेसबुक पर अनावश्यक से बचाव किया जाए। अनर्गल बयानबाजी, समाज को भ्रमित करने वाली बातों व अपनी घरेलू निजी बातों को से बचना हितकर है।

चारधाम यात्रा से पहले अतिक्रमण हटेगा

ऋषिकेश। प्रदेश में चार धाम यात्रा के आगमन से पहले ऋषिकेश शहर में अतिक्रमण हटाने के लिए प्रशासन ने सख्त रुख अपनाते हुए कहा है, शहर की सड़कों, गलियों और पैदल मार्गों पर अतिक्रमण करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। डीएम सविन बंसल ने चेतावनी में कहा कि आने वाले यात्रियों को किसी प्रकार की परेशानी न हो इस बात का ध्यान रखा जाए। यह मार्ग न कले यात्रा का प्रवेश द्वार है बल्कि श्रद्धालु त्रिवेणी घाट, भारत माता मन्दिर और प्रमुख स्थलों का भ्रमण भी इसी मार्ग करते हैं।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

अंबानी की सम्पत्तियां कुर्क

नई दिल्ली। ईडी ने रिलासंय समूह के अध्यक्ष अनिल अम्बानी की कम्पनियों के खिलाफ जारी धनशोधन जाँच के तहत 1800 करोड़ रुपये से अधिक की नई सम्पत्तियों को कुर्क किया है। इसका मूल्य लगभग 12000 करोड़ रुपये है।

विमान हादसे जाँच की मांग

नई दिल्ली। महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री अजित पवार से सम्बन्धित विमान हादसे पर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करने के अलावा तरह-तरह की बातें उठ रही हं। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी, सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने विमान हादसे की जाँच सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में कराने की मांग की है।

जासूसी मामले में सजा सुनाई

नई दिल्ली। राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण की एक विशेष अदालत ने सिम कार्ड के फर्जी इस्तेमाल और सोशल मीडिया मंच के दुरुपयोग से जुड़े पाकिस्तान जासूरी षड्यन्त्र मामले में एक प्रमुख आरोपी अल्ताफ हुसैन को पाँच साल से अधिक की सजा सुनाई है।

परमाणु कार्यक्रम मजबूत करेगा उ.कोरिया

सियोल। उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन ने देश के नए हथियार के परीक्षण का निरीक्षण करने के दौरान कहा कि सत्तारूढ़ पार्टी के आगामी सम्मेलन में उनकी सरकार अपने परमाणु कार्यक्रम को और मजबूत करने की योजना की घोषणा करेगी। यह खबर ऐसे समय में आई है जब एक दिन पहले दक्षिण कोरिया और जापान ने कहा था कि उन्होंने उत्तर कोरिया की ओर से कई बैलिस्टिक मिसाइलें दागे जाने का पता लगाया है।

स्पेन में अवैध प्रवासी होंगे वैध

मैड्रिड। स्पेन सरकार ने एक ऐतिहासिक कदम उठाते हुए करीब 5 लाख अवैध प्रवासियों को कानूनी दर्जा देने की योजना को मंजूरी दी है। आव्रजन मंत्री एलमा सैज ने कहा कि इस योजना के तहत नियमित किए जाने वाले प्रवासी देश के किसी भी हिस्से में, किसी भी क्षेत्र में काम कर सकेंगे। उन्होंने प्रवासन के सकारात्मक प्रभाव को रेखांकित करते हुए कहा कि यह नीति मानवाधिकार, एकीकरण, सामाजिक सह-अस्तित्व और आर्थिक विकास के अनुकूल है।

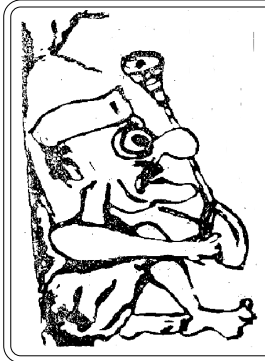

फसक

दाज्यू, माघ का जाड़ा कलेजा खाने वाला ठैरा

लट्ठपेल के आगे सब चुप्पी कर जाते हैं बल

दाज्यू, बसन्त के बाद हुई बर्फबारी ने मौसम का बसन्त क्या बनाया हमारे उक्कू दा ने बुजुर्गों का किस्सा सुनाया जो कहा करते थे- 'पौष की जाड़ा हाय-हाय, माघ का जाड़ा कलेजा खाय'। सचमुच। दाज्यू, पौष की तो रात गहरी होती है, माघ में तो कलेजा चीरता जाड़ा लगता है। वह बात अलग है, बारातों का सीजन झमझमाट में खुल्ले कपड़े पहन कर नाच होने वाला ठैरा। सोर की बानुली, हाट की राधुली, कोटद्वार की लछूली, दानपुरा की रघुली.....कहते रहो और घमाघम घमाघम सब सुपर स्टार है। फरफराट और भरभराट। लट्ठपेल के आगे सब चुप्पी कर जाते हैं बल। अमुवा की डार, सजना बैरी हो गए हमार, ओ सजना बरसा बहार आई जैसे सदाबहार नगमे कौन सुनेगा?

दाज्यू, अल्मोड़ा के चौबानपाटा स्थित गांधी पार्क में हुई जनसभा से जुड़ा विवाद तूल पकड़ता जा रहा है। एक-दूसरे के खिलाफ मामले दर्ज हो चुके हैं। चम्पावत में कांग्रेसियों ने गोजल्यू मन्दिर में उपवास कर कहा- 'ज्योतिर्मठ पीठ के शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानन्द के साथ हुए अभद्र व्यवहार पर माफी मांगी जाए। उधर मूसरी में एक निजी स्कूल की भूमि पर बनी सौ साल से अधिक पुरानी सईद बाबा बुल्लेशाह की मजार को शरारती तत्वों द्वारा तोड़े जाने पर तीस के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जाँच हो रही है। देहरादून राजधानी ठैरा, यहाँ पर दमदम होती रहती है। सोचा भीड़ से हटकर गर्जिया माता के दर्शन करने रामनगर चले जाऊँ, बस भी पकड़ ली। तब तक फोन से पता चला कि रामनगर में बड़े मीट के मूल्य में लगातार वृद्धि होने से नाराज लोगों ने नगर पालिका ईओ का घेराव कर रखा है। प्रदर्शन करने वालों का कहना था- 'बड़े मीट की कीमत 340 रुपए प्रति किलो कर दी गई है, जबकि हल्द्वानी, कालाढूंगी, काशीपुर, जसपुर और रुद्रपुर में यही मीट 270 रुपये प्रति किलो मिल रहा है।' दाज्यू, चारों ओर गजब ही हो रहा है। ऐसे में हम चुपचाप अपने गाँव चले गये। होली में फाग करेंगे। क्या करना है इन भीड़ भरे शहरों में।

रुद्रपुर में पूर्व पूर्व पालिका अध्यक्ष एवं कांग्रेस नेता मीना शर्मा के खिलाफ आडियो प्रकरण का भूत नाचने लगा है बल। मीना शर्मा ने पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल की शिकायत कर पुलिस से सख्त कार्रवाई को कहा है। दाज्यू, किसे पता था हैकड़ मिजाज ठुकराल आडियो के बाद माफी मांगेंगे लेकिन मांग रहे हैं। बुजुर्ग ठीक ही कहते हैं अति बलबलाट नहीं करना चाहिए। दाज्यू, कहाँ तो पद्म सम्मानों के ढोल बज रहे हैं और इस शहर में अक्कड़-बक्कड़ मची है। हमारे भगत दा को भी सम्मान मिला है। खिचड़ी खाकर, हमेशा धोती पहन कर गजरने वाले भगत दा को पद्म मिलने पर हमने भी घर में खिचड़ी का भण्डारा कराया लेकिन बुद्धिबल्लभ कह रहे हैं- 'ऐसा जो क्या दिया है कि पद्म मिल रहा है। राजनीति में चक्कर लगाने के अलावा?' दाज्यू, किसको जो क्या कहा जाए। हवा चल रही है और धूप भी चटक होने लगी है। लेकिन समाज में मचे गदरगोल ने आम जनता का धुंआ निकाल दिया है। ईश्वर सबकी भली करे।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

विकास के लिये.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

सीमा पुलिस बल का गठन हुआ। इसी पुलिस बल में भूपाल सिंह जी ने 34 वर्ष तक उत्कृष्ट सेवा दी। वर्ष 2000 में प्रति नियुक्ति के दौरा संयुक्त राष्ट्र के अन्तरिम प्रशासन मिशन कोसोवो में महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। प्रतिनियुक्ति के दौरान संयुक्त राष्ट्र में उच्च पद हासिल करने के लिए कम्प्यूटर ज्ञान ही एक मात्र योग्यता थी। ऐसे में इनकी दृढ़ता रही कि उन सभी 12 कम्प्यूटर कोर्स तथा 5 प्रशासनिक कोर्स किये। अपनी ड्यूटी को ईमानदारी से करने के बाद इस प्रकार लगातार कोर्स करना बताता है है कि उन्होंने किस तरह से मेहनत की। इस मेहनत के पीछे भूपाल सिंह जी कहते हैं- जिस प्रकार की दुर्गमता हमने देखी है, वह जीवट बनने को प्रेरित करती है। मर्तोली ने 5 स्वतंत्रता संग्राम सेनानी दिये हैं, जो रिकार्ड है। साहसी और मेहनती बुजुर्गों की भूमि का गौरव मिला है। इसलिये कभी भी मेहनत करने से पीछे नहीं हटा। अपने इन्हीं अनुभवों को उन्होंने पुस्तक रूप में सुरक्षित किया है। वह बताते हैं मर्तोली के बाद एक माह उनका परिवार मुनस्यारी रहता था और ट्रेड के कार्य में होने से कपकोट जाना होता। कपकोट में काश्तकारी मुख्य रूप से होती। पिता गोपाल सिंह जी जमीन से जुड़े सामाजिक मान्यता रखते थे और उन्होंने समाज के हर वर्ग से लोगों को अपने साथ जोड़ते हुए सहयोग किया। गुलेर ग्राम मुख्य केन्द्र बना और आते-जाते एवं आयोजनों के लिये सब यहाँ एकत्रित होते। इन सारी स्थितियों के बीच जिस मेहनत को सबने किया उसका परिणाम भी मिला। बड़े भाई खुशाल सिंह मर्तोलिया जोहार के पहले इंजीनियर बने। वह दृढ़ इच्छाशक्ति वाले व्यक्ति थे और सन् 1964 में नियुक्ति के चार साल बाद उन्होंने देह त्याग दी लेकिन जिस प्रकार से वह अपनी मातृभूमि के लिये कार्य करने को लालायिक थे उन्होंने वह कर दिखाया।

श्रीमान भूपाल सिंह मर्तोलिया ने मिले हर अवसर का सदुपयोग किया और आज भी उनका चिन्तन जारी है कि किस प्रकार से हमारे पहाड़ हरियाली से भरे रहें, पलायन रुके, परम्पराओं में मिलावट न हो। बुजुर्गों की सीख, अपने कार्य और अनुभवों के आधार पर शासन प्रशासन में पत्राचार भी करते रहे हैं ताकि सरकार द्वारा लिये जाने वाले निर्णयों में दूरस्थ क्षेत्रों की सुध बनी रहे। श्री मर्तोलिया कहते हैं- सुगम में रहने के लिये बड़ी संख्या में लोग तराई-भाबर में उतर आए हैं लेकिन जो लोग आज भी दूरस्थ में हैं उन्हें अवसर दिया जाना जरूरी है। जनसंख्या को आधार मानकर ही विकास करने दूरस्थ रहने वालों के साथ न्याय नहीं होगा। उनके साथ न्याय के लिये उन्हें वह सुविधाएं दी जानी चाहिए जो मूलभूत आवश्यकता है।

उर्वरता बढ़ाएगा इस्पात का अपशिष्ट

पन्तनगर। खदानों से निकलने वाले लौह अयस्क को इस्पात उद्योगों में स्मेल्टिंग कर लोहा निकालने के बाद बाय प्रोडक्ट के रूप में अपशिष्टों का भण्डारण इस्पात उद्योगों के लिये दुविधा है और पर्यावरण के लिये चुनौती। जीबी पन्त कृषि विश्वविद्यालय के निदेशक शोध डॉ.ए. एस.नैन ने बताया कि इस्पात उद्योग के बाय प्रोडक्ट के माइक्रो न्यूट्रिएंट्स, एलिमेंट्स, टॉक्सिक एलिमेंट्स मौजूद रहते हैं, जो इन उद्योगों में किसी काम के नहीं होते। इसलिए उनके यहाँ यह अपशिष्ट डम्प पड़ा रहता है। इस अपशिष्ट का उपयोग अन्य क्षेत्रों जैसे सीमेंट व सड़क उद्योग में किया जा रहा है। कृषि में भी अम्लीय मृदा में इसका उपयोग किया जा रहा है। परन्तु अन्य मृदओं में इसका उपयोग वर्जित है। इस परियोजना के माध्यम से अन्य मृदाओं में भी इसके उपयोग की सम्भावनाएं तलाशी जा रही हैं।

कार्यशाला

अल्मोड़ा। नशा नहीं, रोजगार दो जन आन्दोलन की 42वीं वर्षगांठ के अवसर पर बसभीड़ा में ज्ञान-विज्ञान व बाल प्रहरी पत्रिका ने स्व.नरोत्तम तिवारी स्मृति लेखन कार्यशाला का आयोजन किया।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

32 बुक्सा परिवारों को जमीन मामले में जाँच का नोटिस

देहरादून। राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग ने गंगा सिंह पांगती द्वारा दिये गये पत्र का संज्ञान लेते हुए बुक्सा समुदाय के 32 बेघर परिवारों को स्वालदे रामनगर में जमीन व घर मामले में जाँच का नोटिस जारी कर दिया है। श्री पांगती की शिकायत पर सचिव आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय और जिला मजिस्ट्रेट नैनीताल से जानकारी चाही है। आयोग ने सम्बन्धित अधिकारियों से 30 दिन के भीतर जवाब मांगा है। उल्लेखनीय है कि प्रदेश में सबसे कमजोर जनजाति के रूप में बुक्सा समुदाय की गणना है, जो अपने रहने के लिये भी परेशान हैं। समाजसेवी अशोक गर्ब्याल पिछले कई वर्षों से इनकी आवाज उठा रहे हैं।

सम्यक् विचार- 156 शिक्षा में भी जातिगत विद्वेष

आज से 40-50 साल पहले स्कूलों में, महाविद्यालयों में यह पता भी नहीं चलता था कि कौन सा शिक्षक किस जाति का है, किस आरक्षित वर्ग का है अथवा अनारक्षित वर्ग का है। कौन सा छात्र एससी का है, कौन एसटी का है और कौन ओबीसी का है। जब जाति का पता ही नहीं चलता था तो सभी मिलजुल कर रहते थे, कोई भेदभाव कक्षा में नहीं होता था। शिक्षक तो बहुत डांटते थे, कभी कभी गुस्से में गाली भी दे देते थे, जातिगत गाली भी हो जाती थी लेकिन विद्यार्थी बुरा नहीं मानते थे। छात्र भी आपस में गाँव की भाषा में गाली गलौज करते थे तो प्राय: अगले ही क्षण भूल जाते थे। जातीय विद्वेष तब नहीं दिखाई पड़ता था।

लेकिन जब से जातिगत आरक्षण, सुविधाएं, वजीफा आदि होने लगा है और नेताओं की जातिगत भाषणबाजी होने लगी है तब से समाज में जातिगत विद्वेष बहुत बढ़ गया है। आजकल एससी, एसटी, ओबीसी अर्थात् आरक्षित वर्ग का व्यक्ति अनारक्षित वर्ग को सहन नहीं कर रहा है। भयंकर घृणा मन में भरी हुई है। और नेता लोग आग में घी डालने का काम कर रहे हैं।

ऐसी स्थिति में एक ही उपाय दिखाई पड़ता है कि आरक्षण विभाग या कार्यालय स्तर पर न दिया जाए बल्कि दूसरे प्रकार से दिया जाए। जैसे 100 विद्यालय खोले जाने हैं तो उसमें जनसंख्या के अनुपात में सभी जातियों के लिये अलग-अलग विद्यालय खोले जाएँ जिसमें सभी अध्यापक कर्मचारी एक ही जाति के हों और उसी जाति के विद्यार्थी भी उसमें पढ़ाई करें। इसी प्रकार चिकित्सालय भी सभी जातियों के लिए अलग-अलग खोले जाएं उसमें सभी डाक्टर कर्मचारी एक ही जाति के हों और उसी जाति के रोगी भी उसमें इलाज कराएं। सभी जातियों की बस्तियां भी अलग-अलग बसा दी जाएं। इससे विद्यालय, चिकित्सालय, समाज आदि में आपस में घृणा का वातावरण भी नहीं रहेगा। न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी। यह मेरा अपना विचार है, इसमें किसी का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

-ओंकार नाथ कोष्टा

ज्योतिष की बातें- 267

13 फरवरी 2026 को सूर्य शत्रुराशि कुम्भ में प्रवेश करेगा । जहाँ पर राहु से युति होगी तो गुरु की शुभदृष्टि भी पड़ेगी। लेकिन कुल मिलाकर सूर्य निर्बल ही रहेगा। अत: अगले एक माह धनु, कन्या, वृषभ व मेष राशि के जातकों को अल्प मात्रा में ही शुभ फल प्राप्त होगा। अन्य राशियों को अभी प्रतीक्षा करनी चाहिए।

महाशिवरात्रि- महाशिवरात्रि का पर्व फाल्गुन कृष्णपक्ष चतुर्दशी निशीथव्यापिनी तिथि में मनाया जाता है। तदनुसार रविवार 15 फरवरी 2026 को रात्रि में चारों प्रहर भगवान शंकर का जलाभिषेक किया जाएगा। इस दिन व्रत करने से वर्ष भर की बारह शिवरात्रियों के व्रत का पुण्य प्राप्त हो जाता है।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

हिमालय संगीत शोध समिति द्वारा आयोजित सेमिनार

'हिमालय के लोक व्यवहार में कला और विज्ञान'

(सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय सन्दर्भ)

'पिघलता हिमालय' का हमेशा से अभियान रहा है कि अपने सीमान्त के लोकभाव/संस्कृति को दृढ़ता के साथ उजागर करे। इस क्रम में महान दानवीरांगना लला जसुली बूढ़ी शौक्याणी की स्मृतियों को संजोने व उनकी धरोहरों को संरक्षित रखने का संकल्प भी लिया है। गत वर्षों की भांति 2026 का यह आयोजन 'हिमालय के लोक व्यवहार में कला और विज्ञान' विषय पर केन्द्रित है जो हिमालय के निडर पत्रकार-कथाकार स्व. आनन्द बल्लभ उप्रेती की स्मृतियों के साथ लला जसुली बूढ़ी शौक्याणी के ऐतिहासिक पदचिन्हों की बात करेगा।

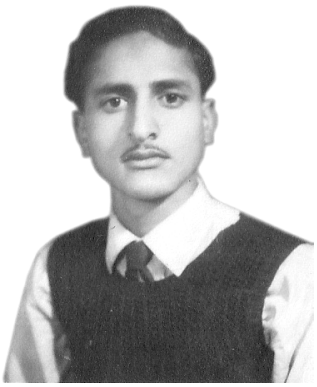

वरिष्ठ कथाकार-पत्रकार स्व. आनन्द बल्लभ उप्रेती 13वां स्मृति समारोह

दिनांक- 22 फरवरी 2026 रविवार
स्थान- सिंथिया सीनियर सेकेंडरी स्कूल
सिंथिया लेन, जज फार्म, मुखानी हल्द्वानी
उद्घाटन- प्रात: 11 बजे

मुख्य अतिथि- पद्मश्री डाक्टर जीवन सिंह तितियाल
विशिष्ट अतिथि- श्रीमान करन सिंह नगन्याल, आईजी गढ़वाल
विशिष्ट अतिथि- श्रीमान नवीन चन्द्र वर्मा, राज्य मंत्री उत्तराखण्ड सरकार एवं केन्द्रीय प्रमुख उद्योग व्यापार प्रतिनधि मण्डल
विशिष्ट अतिथि- श्रीमान अशोक सिंह गर्ब्याल, सेनि. सहा.कमिश्नर

आनन्दश्री सम्मान से सम्मानित होने वाले महानुभाव-

डॉ.गोविन्द सिंह तितियाल, प्रभारी मेडिकल कालेज हल्द्वानी-रुद्रपुर
श्रीमान करन सिंह नगन्याल, आईजी गढ़वाल रेंज उत्तराखण्ड
डाक्टर महिमन सिंह दुग्ताल, फिजिसियन विशेषज्ञ बेस अस्पताल नैनीताल
श्रीमान घनश्याम ग्वाल, रं कल्याण संस्था बरेली/समाजसेवी
श्रीमान जीवन सिंह सीपाल, रं संस्था केन्द्रीय कार्यकारिणी सांस्कृतिक सचिव
श्रीमान देव सिंह पंचपाल, अल्मोड़ा/धरमघर कृषिविज्ञानी व समाजसेवी
इंजी. नरेन्द्र सिंह पतियाल, मुख्य अभियन्ता उत्तराखण्ड सरकार
श्रीमान पंकज जोशी 'विशेष', श्रीमान ललित मोहन बेलवाल, दीक्षा बिष्ट जी, श्रीमान हर्ष रावत, श्रीमान पवन कुंवर
(पत्रकारिता के सजग प्रहरी)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

मिश्र परिवार का संकल्प और व्यवहार समाज को जागृत करने में अग्रणीय

कमला देवी का पार्थिव शरीर मेडिकल कालेज को और मानवता प्रेमियों से नेत्रदान, देहदान, रक्तदान की की अपील

हल्द्वानी। एमबीपीजी के पूर्व प्राध्यापक डॉ. सन्तोष मिश्र की मैं कमला मिश्र का पार्थिव शरीर वैदिक मंत्रोच्चार के साथ मेडिकल कॉलेज को समर्पित कर दिया गया। डॉ. सन्तोष मिश्र के पूरे परिवार ने देहदान हेतु मेडिकल कालेज हल्द्वानी के साथ साथ गृह जनपद प्रतापगढ़ स्थित मेडिकल कालेज में भी देहदान सम्बन्धी शपथ पत्र जमा किया था।

25 जनवरी रविवार को 80 वर्ष की उम्र में कमला मिश्र का निधन होने के उपरान्त चिकित्सा शिक्षा हेतु उनकी देह डॉ. सोनेलाल पटेल मेडिकल कालेज प्रतापगढ़ को सौंप दी गई।

इस अवसर पर मेडिकल कालेज में शरीर रचना विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर और देहदान अभियान की संयोजक डा. आकांक्षा सिंह ने मिश्र परिवार के निर्णय का स्वागत करते हुए लोगों से देहदान संकल्प लेने का आह्वान किया ताकि मेडिकल स्टूडेंट्स को सैद्धांतिक ज्ञान के साथ व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त हो सके और वे कुशल चिकित्सक बनकर समाज की सेवा कर सकें।

डा. आकांक्षा सिंह ने कहा कि मेडिकल कालेज प्रतापगढ़ में पुरुषों की बाडी तो मिल गई थी लेकिन महिला की बाडी न होने से मेडिकल स्टूडेंट्स को बेहतर शिक्षण में असुविधा हो रही थी। कमला मिश्र के देहदान से मेडिकल कालेज प्रतापगढ़ को पहली महिला देह प्राप्त हुई है जिससे यूजी, पीजी पाठयक्रम शिक्षण को विशेष सहायता प्राप्त होगी।

मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य ने कमला मिश्र के पति श्री निवास मिश्र को देहदान प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कई सामाजिक और मानवतावादी अभियानों की शुरुआत करने वाले डॉ. सन्तोष मिश्र पिछले पन्द्रह वर्षों से नेत्रदान, देहदान जागरूकता के लिए कार्य कर रहे हैं।

युग दधीचि देहदान अभियान के प्रमुख मनोज सेंगर ने मानवता प्रेमियों से रक्तदान, नेत्रदान, देहदान के लिए आगे आने का आग्रह किया।

इस मौके पर डॉ. रश्मि यादव, राजकुमार मिश्र, अतुल खण्डेलवाल, सुनील मिश्र, अम्बुज तिवारी, रमेश मिश्र, धनंजय मिश्र, विपिन मिश्र, संदीप त्रिपाठी, कैलाशनाथ मिश्र, गौरव मिश्र, सौरभ मिश्र, आचार्य डा. राजाराम मिश्र, रामराज तिवारी, श्रद्धानन्द मिश्र सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

उल्लेखनीय है कि प्रतापगढ़ की माटी में जन्मे सन्तोष मिश्र का कर्म क्षेत्र उत्तराखण्ड बना और उनके परिवार जिस प्रकार से मानव सेवा का परोपकारी कार्य किया है वह हमेशा याद किया जाएगा। इनके माता-पिता सहित पति पत्नी व बच्चों ने देहदान का ऐलान करने के साथ ही समाज में इस अभियान को जिस प्रकार से चलाया, उससे कई लोग प्रेरित होकर आगे आए हैं। उच्चशिक्षा में हिन्दी साहित्य के प्रोफेसर मिश्र ने जिस लगन के साथ विद्यार्थियों को रास्ता दिखाया, उतना ही योगदान श्रीमती गीता मिश्र का रहा है। इस दम्पत्ति ने दूरस्थ क्षेत्र स्याल्दे में जिस प्रकार से समाज को जोड़ा और सीख दी वह बड़ा उदाहरण है। डॉ.मिश्र ने अपनी सरकारी सेवा से स्वेच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर मानव जीवन के व्यवहार को समझाया कि सबकुछ यहीं रहना है। वह कहने में नहीं करने में विश्वास करते हैं। माता जी के देहदान के बाद श्राद्ध में उन्होंने नेत्र शिविर लगाकर परोपकार किया।

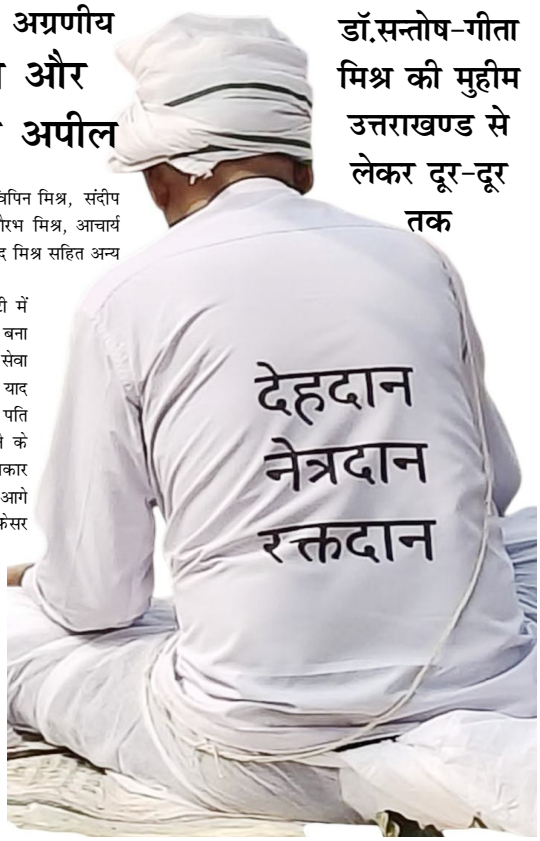

डॉ.सन्तोष-गीता मिश्र की मुहीम उत्तराखण्ड से लेकर दूर-दूर तक

ग्रीन हाइड्रोजन नीति को कैबिनेट की हरी झण्डी

देहरादून। सीएम पुष्कर धामी की अध्यक्षता में सचिवालय में आयोजित कैबिनेट की बैठक में 8 फैसलों को मंजूरी दी गई। कैबिनेट ने हरित हाइड्रोजन उत्पादन को बढ़ावा देने के लिये 'उत्तराखण्ड ग्रीन हाइड्रोजन नीति 2026' को स्वीकृति दी। प्रस्ताव के अनुसार, राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन नीति 2022 व राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन 2023 आगामी दशक में भारत का ग्रीन हाइड्रोजन का वैश्विक केन्द्र बनाने के दृष्टिकोण से अत्यन्त उपयोगी होने के परिप्रेक्ष्य में सरकार भी ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन के दृष्टिगत प्रदेश में स्वच्छ एवं हरित ऊर्जा उत्पादन स्रोतों को प्रोत्साहित करेगी। ग्रीन हाइड्रोजन एक स्वच्छ ऊर्जा एवं औद्योगिक ईंधन होने के कारण नेट जीरो के लक्ष्य को प्राप्त करने सहायक सिद्ध होगा।

परिक्रमा

भू-अर्जन में आपसी समझौते से लेंगे जमीन

देहरादून। यूएसनगर जिले के प्राग फार्म प्रकरण में जारी शासनादेश में संशोधन होगा। भू-अर्जन, पुनर्वासन आदि मामलों में अब भू-स्वामियों से आपसी समझौते के अनुसार जमीन ली जा सकेगी। वहीं, कैबिनेट ने दून में जीआरडी उत्तराखण्ड विवि के स्थापना स्वीकृति दी है। महा निदेशक सूचना बंशीधर तिवारी ने कैबिनेट के फैसलों की जानकारी देते बताया भू-अर्जन, पुनर्वास एवं पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिकर और पाददर्शिता का अधिकार अधिनियम2013 की सुसंगत धाराओं की प्रक्रियान्तर्गत भूमि अर्जन हेतु लगने वाले अत्यधिक समय एवं सीधे भूमिक्रय करने की व्यवस्था को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से राज्य परियोजनाओं के लिए भूस्वामियों से परियोजनाओं हेतु भूमि प्राप्ति करने हेतु प्रक्रिया प्रस्तावित की गई है।

कालाढूंगी सीट की घमासान में भगत केन्द्र में

उत्तराखण्ड में जिस प्रकार का घमासान हर क्षेत्र में मचा हुआ है उसमें राजनीति का तड़का भी है। बात करें कालाढूंगी विधानसभा सीट की तो यहाँ पर लगातार विधायक बनते रहे दिग्गज बंशीधर भगत केन्द्र में है। इस सीट पर राजनीति का घमासान इस बार सर्वाधिक होने वाला है क्योंकि भाजपा के दबदबे वाली इस सीट पर पार्टी में ही घनघोर घमासान है। लगातार देखा जा रहा है कि श्री भगत जिस प्रकार से सक्रिय हैं उससे अनुमान लगाया जा रहा है कि अब अपने पुत्र विकास भगत को भाजपा के प्रत्याशी के रूप में चाहते हैं। विकास भगत भी लगातार जोश में हैं लेकिन पार्टी के ही दबदबे वाले हल्द्वानी के मेयर गजराज बिष्ट की चर्चा कम नहीं है। दूसरी ओर हिन्दूवादी नेता विपिन पाण्डे की धार लगातार इस बात का संकेत है कि उनके मन की नहीं हुई तो वह भगत की नहीं मानेंगे, ऐसा वह पहले ही ऐलान भी कर चुके हैं। भाजपा के दूसरे नेता भी किस प्रकार की भूमिका में होंगे यह तो समय बताएगा।

कांग्रेस इस सीट पर अपनी गलती और बगावत के कारण लगातार हारती रही है। राहुल गांधी के निकट रहने वाले प्रकाश जोशी इस सीट पर अचानक आकर चुनाव मैदान में दिखते रहे हैं और उनकी पकड़ देखते हुए पार्टी के दबदबे वाले नेता भी साथ देते हैं लेकिन अचानक चुनाव में कूदना लाभ नहीं दे सका। पार्टी के महेश शर्मा की बगावत ने भी भाजपा को लाभ दिया। पर इस बार पूर्व ब्लाक प्रमुख भोला दत्त भट्ट सहित अन्य नेता पूरी ताकत लगाने की तैयारी कर रहे हैं। नीरज तिवारी की सक्रियता देखी जा रही है। फिलहाल 2027 के चुनाव का सारा दारोमदार बंशीधर भगत को देखते हुए होगा।

धारचूला सीट पर हरीश धामी का दबदबा बना है

2026 का साल पूरी तरह 2027 के चुनाव की तैयारी का है और नेतागण अपने प्रभाव को दिखाने लगे हैं। सीमान्त की मुनस्यारी-धारचूला सीट पर लगातार जीत करते रहे कांग्रेस विधायक हरीश धामी का दबदबा बना है। सीट पर विकास कार्यों को लेकर जिस प्रकार से भाजपा कांग्रेस नेताओं के बीच जुबानी जंग चल रही है उसमें विधायक ने जाँच करते हुए दोषियों को सजा देने की मांग की है। भाजपा की ओर से विधायक धामी को घेरने की बराबर कोशिश हो रही है और पार्टी की ओर से टिकट की चाह रखने वाले नेता और संगठन के अग्रणीय हरीश धामी पर आरोप लगा रहे हैं लेकिन सीमान्त की इस सीट पर किस प्रकार की घमासान होगी यह अभी से कहना कठिन है। भाजपा किसको टिकट देगा यह तय होना बहुत दूर की बात है। कांग्रेस की ओर से धामी दमदार हैं।

गंगोलीहाट सीट पर खजान की धुंआधार दौड़

गंगोलीहाट-बेरीनाग विधानसभा सीट के लिये 2027 में अन्तिम निर्णय क्या होगा यह तो जनता तय करेगी लेकिन पार्टियों से ज्यादा पार्टी नेता मचल रहे हैं। सोशल मीडिया पर लगातार बात-बहस, आयोजनों में भागीदारी और अपने को विकास पुरुष बताने में कोई पीछे नहीं है। जिन नामों की चर्चा है उसमें कांग्रेस के खजान गुड्डू सबसे आगे हैं। आरक्षित सीट पर खजान पिछले दो चुनाव में जिस प्रकार से दाबेदारी कर चुके हैं, उनका अनुभव गहरा है और वह गंगोलीहाट, बेरीनाग, पांखू, गणाई चारों ओर अपनी टीम के साथ दिन-प्रतिदिन सम्पर्क में हैं। उनकी धुंआधार दौड़ ने कांग्रेस की टीम को एकजुट तो किया ही है। पार्टी की ओर से मनोज कुमार की सक्रियता भी कम नहीं है जो अपना दावा कर रही है।

भाजपा की ओर से विधायक फकीर राम टम्टा की दाबेदारी को अनदेखा नहीं किया जा सकता है क्योंकि जिस प्रकार से वह लोगों के बीच डबल इन्जन सरकार की बात रखते हुए हर जगह सुख-दुःख में जाते हैं वह मजबूत प्रत्याशी होंगे। पूर्व विधायक मीना गंगोला की बात को भी पार्टी के सलाहकार जरूर सुनेंगे। पांखू से बहुत ही जझारू नेता के रूप में दिनेश आर्य का दावा भी इस बार है। पार्टी से टिकट की चाह रखने वाले दर्पण कुमार अपने अंदाज में मेलजोल कर रहे हैं जबकि बहुत ही विनम्र प्रवृत्ति के भूपाल आर्या की चुप्पी किसी चमत्कार से कम नहीं है। पार्टी का अन्तिम फैसला क्या होगा यह तो समय बताएगा लेकिन कांग्रेस इस बार पूरी धार के साथ इस सीट पर उतरने जा रही है। पार्टी संगठन की बैठकों से पता चल रहा है कि पुरानी गलती से सबक लेते हुए कांग्रेस मैदान जीतना चाहेगी। अभी तो सभी नेताओं की ओर से बहलावे के दिन हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

जहाँ जंगलों में.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

और गन्धर्व विवाह कर कर पाते? तपोवन पर्याप्त समृद्ध थे, न होते तो कैसे याज्ञवल्क्य अपनी सैकड़ों गउओं को वहाँ रख पाते और कैसे अत्रि-पत्नी अनसूया सीता को सोने के गहनों का अद्भुत उपहार दे पाती? तपोवनों में विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान की जाती थी इसके बारे में शायद ही किसी को शक हो, पर वहाँ विराट साहित्य की भी रचना हुई इसका प्रमाण चाहिए तो वेद पढ़ सकते हैं, आरण्यक साहित्य पढ़ लीजिए, तमाम उपनिषदें पढ़ जाइए।

यानी जैसे आज शहरों में आपको बस्तियां मिलती हैं, वैसी ही बस्तियां पुराने जमाने में तपोवनों में रही थीं। फर्क बस इतना ही था कि शहरों में शोर था, तपोवनों में शान्त वातावरण था। शहरों में व्यस्तता और उससे पैदा होने वाले तनाव थे, तपोवनों में जीवन में सक्रियता बेशक थी पर मारामारी नहीं थी। शहरों में जीवन विलासितापूर्ण था, तपोवनों में सादगी थी, तामझाम नहीं था और गहमागहमी नहीं थी। अन्यथा तपोवनों में बाकायदा सामाजिक जीवन था, एक अलग तरह का सामाजिक जीवन जहाँ लोग परिवार समेत रहते थे, परिवार बढ़ते रहते थे और तपोवन आत्मनिर्भर थे। अगर जीवन का एक रूप शहरी थाा, एक रूप ग्रामीण था, तो एक रूप तपोवन का था। इन तपोवनों में मानव समाज की तमाम शारीरिक व मानसिक समस्याएँ थीं, तपोवन वासी जिनके समाधान अपनी जीवन शैली के हिसाब से तलाशते रहा करते थे।

इसलिए अगर निष्कर्ष यह निकल रहा हो कि भारत नामक देश में जंगलों में भी संस्कृति और सभ्यता का प्रसार कर लिया गया था तो इस निष्कर्ष को हम अद्भुत बेशक मानें, पर इससे चौंकने की इसलिए जरूरत नहीं क्योंकि यह एक सच्चाई थी। हाँ, एक प्रश्न जरूर उठता है कि क्यों किया गया इस तरह वन संस्कृति का विकास? अरण्यों में समाज को बसाने के पीछे क्या कारण थे? जंगलों में जीवन का मंगल पैदा करने के पीछे क्या उद्देश्य रहे होंगे? इसका जवाब तो अभी तलाशते ही हैं, पर उससे पहले हम एक बात फिर से दोहराना चाहते हैं जिसे हम पहले भी दो एक बार कह चुके हैं। वह यह कि पश्चिम में जिस जंगल को असभ्यता की निशानी माना जाता है और जिस जंगल के कानून को बर्बरता का पर्यायवाची माना जाता है, वही जंगल हमारे देश में संस्कृति के अद्भुत केन्द्र रहे हैं और वहाँ के बनाए कानूनों से हमारे देश का समाज प्रेरणा प्राप्त करता रहा है। जवाब तलाशने से पहले हल्के से यह भी बता देने में कोई हर्ज नहीं है कि जिन लोगों ने जंगलों में जाकर पूर्ण सुसंस्कृत और विकसित समाज बसाने की सोची होगी वे न केवल प्रकृति और पर्यावरण के साथ अनुराग के स्तर पर जुड़े होंगे। बल्कि हिंसक जंगली जानवरों के प्रति भी उनका मन आत्मीयता से भरा होगा। प्रकृति और पर्यावरण के प्रति स्वाभाविक स्नेह से खिंचे और जंगली जानवरों के प्रति निडर आत्मीयता से भरे जो लोग जंगलों में तपोवन बनाकर रहते होंगे वे वाकई कोई बड़ा उद्देश्य ही पूरा कर रहे होंगे। सवाल है, क्या था वह उद्देश्य? क्या थे वे लक्ष्य जिन्होंने इस देश में अरण्य संस्कृति को, तपोवन जीवन को इतनी ऊँचाईयों तक पहुँचा दिया?

जाहिर है कि जंगलों को जीवन के मंगल से भर देने का एक ही उद्देश्य था कि देश के ज्ञान और विज्ञान की प्रवाहिका नाड़ियों को लगातार स्पन्दित रखा जाए। शिक्षा अगर किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास की मूलभूत जरूरत है तो उस जरूरत को पूरा करने वालों का जीवन साधनापूर्ण होना ही चाहिए। शहरों का जीवन कैसा सुविधा सम्पन्न और विलासितापूर्ण था इसका पता लगाना हो तो वात्स्यायन का कामशास्त्र पढ़ जाइए। उसका नागरिक शहर के विलामय और आरामपसन्द जीवन का मुखर प्रतीक है। ऐसे नागरकों (नागरिकों नहीं, नागरकों) की विलासमय भीड़ में शिक्षा उद्देश्य वैसे ही खो जाते हैं जैसे हम उन्हें आज नष्ट होता हुआ देख रहे हैं। शिक्षा को उसके उद्देश्यों से जोड़े रखने के लए अगर कुछ लोगों को वन में जाकर नए और अलग किस्म के समाज के विकास का विचार आया हो तो उसमें हैरानी क्या है? इसीलिए शायद ही पुराने भारत का कोई ऐसा वन हो जिसमें तपोवनों की कभी कमी रही हो, और शायद ही कोई तपोवन ऐसा रहा हो जिसमें कोई विद्याकुल न हो। इन विद्या कुलों में छात्र एवं छात्राएँ सामाजिक रुतबे को भूलकर एक साथ ज्ञान और विज्ञान की विभिन्न शाखाओं का अध्ययन कर सदियों की साधना के परिणामस्वरूप वह समाज बना सके जिसे हम भारत कहते हैं।

जंगलों में हिंसक पशुओं और मनोरम पर्यावरण के बीच जब तक संस्कृति प्रसार करने वाला जीवन सहज रूप से उपलब्ध था तब तक समाज को कोई ऐसा प्रावधान करने की जरूरत नहीं लगी कि मनुष्य के लिए वनवास आवश्यक बना दिया जाए। जो चीज हमें सहज उपलब्ध होती है, उसे पाने के लिए हम कोई प्रावधान नहीं करते। प्रावधान उसी का करते हैं जो हमें स्वाभाविक रूप से उपलब्ध न हो। इसलिए जब आगे चलकर यह नियम बना दिया गया कि हर मनुष्य को ब्रह्मचर्य और गृहस्थ जीवन बिताने के बाद वानप्रस्थी हो जाना चाहिए, अर्थात वन में प्रस्थान कर जाना चाहिए तो जाहिर है कि तब तक संस्कृति का अद्भुत प्रसार करने वाले इस अरण्य जीवन का पुराना वैभव खत्म हो चुका था। तब लोग सिर्फ आश्रमव्यवस्था की खानापूर्ति के लिए ही वन की ओर प्रस्थान कर लेने के इरादे जताया करते होंगे। ईसा से दो सौ साल पहले केरल में पैदा हुए संस्कृत के महान नाटककार भास ने अपने कुछ नाटकों में ऐसे तपोवनों का वर्णन किया और वर्णन शैली से लगता है कि तब तक तपोवनों की सिर्फ याद ही बाकी बची थी। वैसा ही कुछ वर्णन कालिदास ने अपने विश्व प्रसिद्ध नाटक अभिज्ञान शाकुन्तल में किया है जो भास से कुछ सदी बाद उज्जयिनी में हुए। अन्यथा पुराने भारत में वन-जीवन का अपना ही विशिष्ट स्थान हमारे समाज में रहा था। क्रमशः कृषिभूमि का फैलाव होने से जंगल कम होते गए तो अरण्य जीवन का ह्रास स्वाभाविक रूप से हो गया। पर कभी देश में अरण्य जीवन समाज की महत्वपूर्ण धारा थी इसका प्रमाण व चारों वेद हैं और वह उपनिषद साहित्य है जो तपोवनों में ही मुख्य रूप से लिखा गया। कितना फर्क पड़ गया है। आज जंगलों को बचाने के लिए कानून बन रहे हैं क्योंकि जंगल ढूंढे नहीं मिलते और इन्हीं जंगलों में हमने अद्भुत सांस्कृतिक जीवन का विकास कभी किया था, उन्हें शिक्षा, ज्ञान और विज्ञान का केन्द्र कभी बनाया था।

(साभार नवभारत टाइम्स)

अखिल भारतीय अराजपत्रित अधिकारियों की संस्था एसोसिएशन ऑफ ऑर्डनेंस एण्ड इक्विपमेंट फैक्ट्रीज एण्ड क्वालिटी एश्योरेंस ऑर्गनाइजेशन की दहाड़

कर्मचारियों में भेदभाव न किया जाए

देहरादून। अराजपत्रित अधिकारियों के हितों की रक्षा और उनके अधिकारों के लिए काम करने वाले संगठन अखिल भारतीय अराजपत्रित अधिकारियों की संस्था ऑर्डनेंस एण्ड इक्विपमेंट फैक्ट्रीज एण्ड क्वालिटी एश्योरेंस ऑर्गनाइजेशन ने बैठक करते हुए कर्मचारियों में भेदभाव कर उत्तेजित कर करने को कहा है।

एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष अंजन दा की अध्यक्षता में हुई वर्चुअल बैठक में राष्ट्रीय सचिव अजय जी ने बताया कि एशोसिएशन न्याय की बात के लिये बराबर गति से लगी है। नार्थ जोन की बैठक में ओएलएफ, ओएफडी, आ.नि. चण्डीगढ़, शाहजहापुर, हजरतपुर, मुराद नगर की निर्माणियों की बैठक नार्थ जोन गिरीश चन्द्र उप्रेती की अध्यक्षता एवं नरेश राठौर के संचालन में हुई। मुख्य वक्ता फिरोज खान, धर्मेन्द्र, राम मोहन, सीएल वैगा, देवेन्द्र सिंह, कलदीप, अनिल कुमार, राम चन्द्र, नरेश कुमार, रवि दत्त, पंकज चौहान, प्रदीप कुमार, रणवीर तोमर, सुरेन्द्र तोमर ने विचार रखते हुए आने वाले समय में हड़ताल में पूर्ण समर्थन की बात दोहराई। बैठक में स्थानीय प्रशासन और सीएमडी से मांगों को पूर्ण करने का निवेदन किया गया। जिसमें कहा कि एमसीएम को सीआईएम बनाया जाए। एलओएम को सीआईएम को कम्पनी एलाउन्स दिया जाए। मेन पॉवर के साथ स्टाफ की भर्ती हो। मृतक आश्रित को भारत सरकार के आदेशानुसार भर्ती अवसर मिले। वर्कलोड पूरा करने के लिये कच्चे माल की व्यवस्था हो। कर्मचारियों में भेदभाव तुरन्त बन्द किया जाए। सविधा कर्मचारियों को सुरक्षा उपकरण दिये जाएं। खतरनाक कार्य हेतु उचित उपकरण मुहैया होने चाहिये। मांग रखी कि सभी कर्मचारियों के सविधा कर्म को भी सुरक्षा मिले। बैठक कार्यवाही में यूनाइटेड फोरम ऑफ ऑर्डनेंस इम्प्लॉइज में सभी शामिलों ने इस न्याय की लड़ाई में एकजुटता दोहराई।

HIMALAYAN MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत
सम्पर्क 7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान)
मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
मो.न. 8958525979, 9411134775
फोन सम्पर्क- 05961-222236
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

गड़बड़ियों को उजागर करने का दायित्व जिस आडिट निदेशालय के पास है उसकी मुख्य कुर्सी पर कोई नहीं टिक रहा

हल्द्वानी। राज्य के सभी विभागों की गड़बड़ियों को उजागर करने का दायित्व जिस आडिट निदेशालय के पास है उसी निदेशालय के निदेशक की कुर्सी पर कोई अधिकारी टिक नहीं रहा है। आडिट निदेशालय की स्थापना के बाद से अब तक 13 साल में निदेशक के पद पर 17 अधिकारियों की अदला बदली की गई है। सरकार द्वारा अब निदेशक के पद से वरिष्ठ आईएएस दिलीप जावलकर को हटाते हुए उनके स्थान पर 18 वें निदेशक के रूप में वित्त सेवा के मनमोहन मैनाली की तैनाती के आदेश जारी करने के कुछ ही घण्टे के बाद इस तैनाती को निरस्त करने के आदेश जारी किये गये।

उत्तराखण्ड कार्मिक एकता मंच के संस्थापक अध्यक्ष रिटायर्ड असिस्टेंट आडिट आफिसर रमेश चन्द्र पाण्डे ने आरोप लगाया कि निदेशक के पद पर नियम विरुद्ध तैनाती के आदेश हुए। उन्होंने कहा कि 30 नवम्बर 2018 को जारी विभागीय ढांचे में निदेशक का पद आईएएस संवर्ग का है। इसके विपरीत अभी ताजे इस पद पर वित्त सेवा के अधिकारी की तैनाती से उठे विधिक सवाल को दृष्टिगत रखते हुए ही दो दिस बाद ही कार्मिक एवं सतर्कता अनुभाग-01 की ओर से संयुक्त सचिव राजेन्द्र सिंह पतियाल के हस्ताक्षर से इसे निरस्त करने के आदेश जारी हुए हैं।

रिटायर्ड असिस्टेंट आडिट आफिसर रमेश चन्द्र पाण्डे ने आरोप लगाया कि राज्य में शुरु से ही वित्त सेवा के अधिकारियों की महत्वाकांक्षा आडिट महकमें में हावी रहने की रही है। उन्होंने कहा कि राज्य में आडिट विभाग 12 साल तक निदेशालय कोषागार एवं वित्त सेवाएं के अधीन एक अनुभाग के रूप में स्थापित रहा। इस दरम्यान यह महसूस किया जाता रहा कि वित्त सेवा के अधिकारियों के आडिट महकमे के शीर्ष पद पर रहते निष्पक्ष आडिट नहीं किया जा सकता है। इसी आधार पर स्वतन्त्र आडिट निदेशालय की मांग को लेकर 12 साल के संघर्ष के बाद आखिरकार दिसम्बर 2012 में आडिट एक्ट पारित होने के बाद आडिट का स्वतन्त्र निदेशालय वजूद में आया।

उन्होंने कहा कि आडिट जैसे महत्वपूर्ण निदेशालय में निदेशक के पद पर लगातार होती रही अदला बदली से जहाँ एक ओर विभाग के कामकाज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है वहीं सरकार के जीरो टॉलरेंस के दावों पर भी सवाल उठ रहे हैं। आरोप लगाया कि आडिट एक्ट के अनुरूप आडिट आपत्तियों के निस्तारण की कार्यवाही नहीं होने से करोड़ों की स्पेशल आडिट रिपोर्ट फाइलों में धूल फांक रही हैं। जैसे ही कोई निदेशक कामकाज को समझने के बाद इन फाइलों पर कार्यवाही करने का मन बना रहा है उतनी देर में उसका तबादला कर दिया जा रहा है। इस स्थिति के चलते जीरो टालरेंस के दावों पर उठ रहे सवालों पर विराम लगाने के लिए सरकार को चाहिए कि वह निदेशक के पद पर ऐसे अधिकारी की तैनाती करे जो टिकाऊ होने के साथ ही आडिट में रुचि रखने वाला भी हो। 18 दिसम्बर 2012 को आडिट निदेशालय की स्थापना होने बाद पहले निदेशक के रूप में श्रीमती सौजन्या 1 दिसम्बर 2013 तक रही। इसके बाद दिलीप जावलकर 9 फरवरी 2014 तक, आस्था लूथरा 6 फरवरी 2015 तक, श्रीधर बाबू अद्दांकी 17 अप्रैल 2015 तक, विनयशंकर पाण्डे 31 मई 2017 तक, श्रीधर बाबू अद्दांकी 5 सितम्बर 2017 तक, अमित नेगी 15 अप्रैल 2018 तक, सचिन बंसल 6 फरवरी 2019 तक, अमित नेगी 18 मार्च 2019 तक, सचिन बंसल 28 जून 2019 तक, एस.ए. मुरुगेशन 5 अगस्त 2020 तक, डा. इकबाल अहमद 9 मई 2021 तक, बी षणमुगम 17 अगस्त 2021 तक, सुरेन्द्र नारायण पाण्डे 2 जुलाई 2024 तक, विनोद कुमार सुमन 13 मई 2025 तक, बी षणमुगम 29 जून 2025 तक रहे।

राज्य में निदेशक आडिट के पद पर लगातार अदलाबदली के चलते विभागीय कामकाज प्रभावित हो रहा है। आडिट एक्ट के अनुरूप आडिट आपत्तियों के निस्तारण की कार्यवाही नहीं होने से करोड़ो की स्पेशल आडिट रिपोर्ट फाइलों में धूल फांक रही हैं जबकि वार्षिक आडिट रिपोर्ट तीन साल से विधान सभा के पटल पर नहीं आई है। विकास के प्रति जवाबदेही के सवाल को लेकर श्री पाण्डे ने आडिट एक्ट के उल्लंघन के इस गम्भीर मामले में सत्तापक्ष के साथ ही विपक्ष की चुप्पी पर भी गहरी हैरानी व्यक्त की है। लोक सूचना अधिकार के तहत प्राप्त सूचनाओं के आधार पर मुख्यमंत्री को प्रेषित पत्र में रिटायर्ड असिस्टेंट आडिट आफिसर रमेश चन्द्र पाण्डे ने आडिट एक्ट का जवाबदेही के साथ परिपालन सुनिश्चित कराने का आग्रह किया है। दरअसल उत्तराखण्ड लेखा परीक्षा अधिनियम 2012 के नियम 8(3) में प्रावधान है कि निदेशक लेखा की एक संहत लेखा परीक्षा(आडिट) रिपोर्ट तैयार करेगा या करवायेगा और उसे विधान सभा के पटल पर रखने के लिए हर साल राज्य सरकार को भेजेगा। इस नियम के तहत वर्षवार आडिट रिपोर्ट सदन के पटल पर नहीं रखी जा रही है। इस स्थिति पर सवाल उठने के बाद सरकार ने वर्ष 2014-15 से 2021-22 तक 8 साल की रिपोर्ट सदन के पटल पर रखी थी लेकिन अब 2021-22 से 2024-25 तक 3 साल की आडिट रिपोर्ट सदन के पटल पर नहीं पहुंची हैं।

माघ खिचड़ी की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

डा. प्रहलाद सिंह मर्तोलिया
जोहार नगर भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

नवीन चन्द्र वर्मा
दर्जा राज्यमंत्री
उत्तराखण्ड सरकार
हल्द्वानी
ऊंकार ज्वैलर्स
शारदा मार्केट, हल्द्वानी

शेरजांग होम स्टे
(पार्टी लॉन, शादी विवाह, पार्टी हेतु)
सरमोली, मुनस्यारी
मनोज सिंह धर्मशक्तू

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)